दृष्टि The Vision

इतिहास (वैकल्पिक विषय)
(मॉड्यूल VI-मध्यकालीन इतिहास)

DTVF/18(JS)–OPS-H6

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): mintu lal meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 7/8/18 / 07

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	4	2	2	5	8

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam.): हिन्दी

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

नोट: प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश अंतिम पृष्ठ पर संलग्न है।

Evaluation Analysis

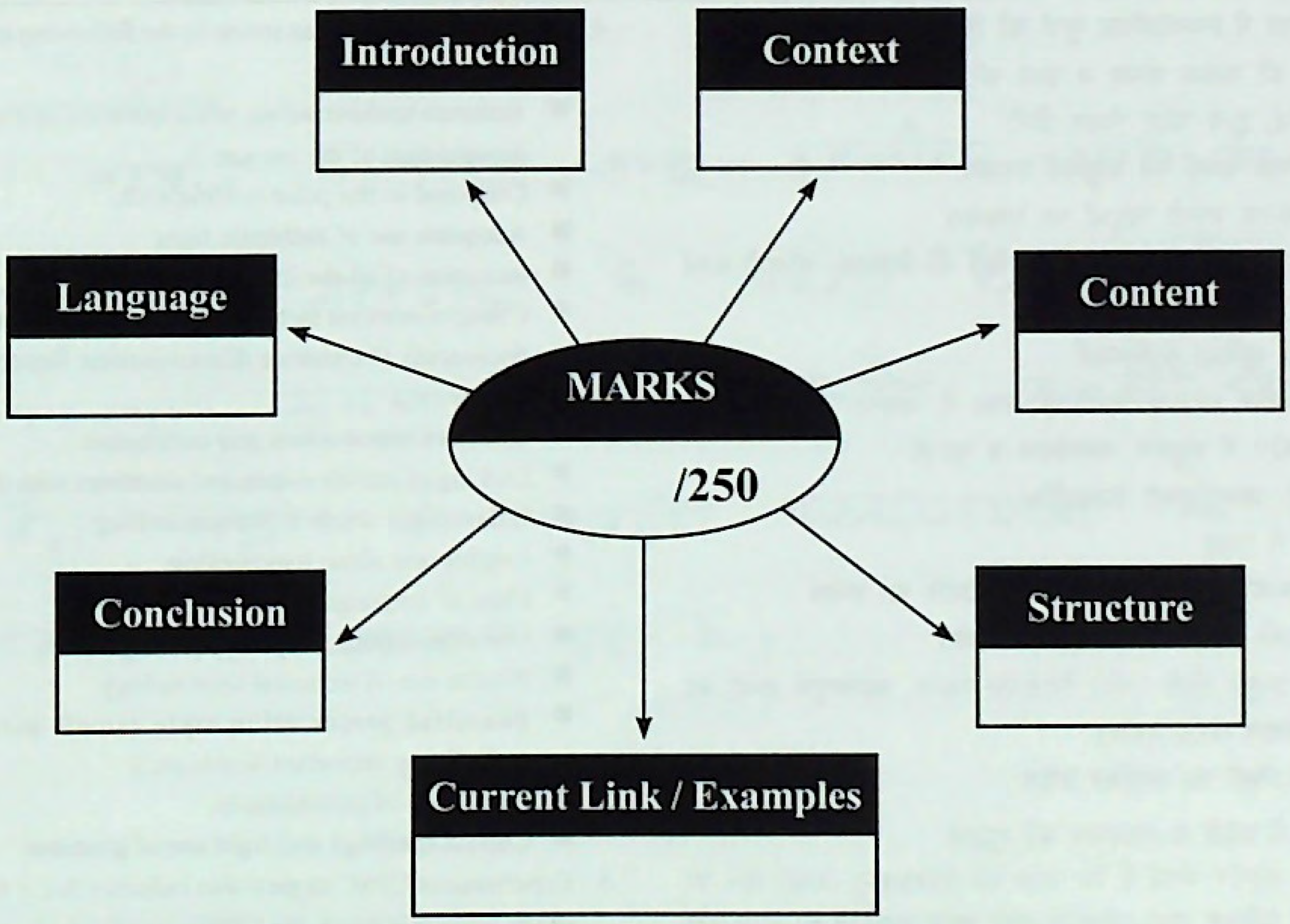

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मॉडल उत्तर

खण्ड-क / SECTION-A

1. आपको दिये गए मानचित्र (पृष्ठ न. 5) पर अंकित निम्नलिखित स्थानों की पहचान कीजिये एवं अपनी प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में उनमें से प्रत्येक पर 30 शब्दों की संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये। मानचित्र पर अंकित प्रत्येक स्थान के लिये स्थान-निर्धारण संकेत क्रमानुसार नीचे दिये गए हैं। $2\frac{1}{2} \times 20 = 50$

Identify the following places marked on the map provided to you (on page no. 5) and write a short note in about 30 words on each of them in your Question-cum-Answer Booklet. Locational hints for each of the places marked on the map are given below seriatim: $2\frac{1}{2} \times 20 = 50$

(i) एक ताम्रपाषाण स्थल

A Chalcolithic site

अहार: यह राजस्थान के उदयपुर जिले में बनास नदी घाटी में स्थित है। इसका कालक्रम 2100-1500 ई.पू. है। यहाँ से तांबे के उपकरण अत्यधिक मात्रा में प्राप्त होने के कारण इसे ताम्रवती के नाम से भी जाना जाता है।

(ii) एक हड़प्पाकालीन स्थल

A Harappan Site

मांडा:
वर्तमान में यह जम्मू-कश्मीर राज्य के अखनूर सेक्टर में स्थित है। यह हड़प्पा सभ्यता का सबसे उत्तरी स्थल है। यहाँ से परवर्ती हड़प्पाकाल के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(iii) एक नवपाषाणकालीन स्थल

A Neolithic Site

मास्की:

यह कर्नाटक के रायचूर जिले में स्थित है। यहाँ से काले-लाल मृद्भाण्ड, शंख, मनके एवं टेराकोटा प्राप्त हुए हैं। साथ ही कृषि एवं पशुपालन के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं। अशोक का लघुशिलालेख भी यहाँ से मिला है।

(iv) एक प्रसिद्ध जैन तीर्थस्थल

A famous Jain Pilgrimage Site

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(v) एक प्रमुख शिक्षा केंद्र

A famous Education Center

वाराणसी :

वर्तमान में यह उत्तरप्रदेश का जिला है। छठी शताब्दी ई. पू. में यह काशी महाजनपद की राजधानी था। यह ब्राह्मण धर्म की शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था। वर्तमान में भी यह भारत का प्रमुख सांस्कृतिक नगर है।

(vi) एक बंदरगाह नगर

A port City

बारबरीकम :

यह पाकिस्तान के सिन्धु नदी के मुहाने के पास स्थित है। यह मौर्योत्तरकाल का प्रमुख बन्दरगाह था। यहाँ बैक्ट्रिया से चीनी सूत एवं रेशम प्राप्त कर पश्चिमी देशों को भेज दिया जाता था।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(vii) एक बौद्ध गुफा स्थल

A Buddhist Cave Site

(viii) एक राजधानी

A Capital

त्रिपुरी:

वर्तमान में यह मध्यप्रदेश के जबलपुर जिले में अवस्थित है। यह कलचुरी शासकों की राजधानी थी। कलचुरी में मोमलवंश का शासन था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ix) एक गुप्तकालीन मंदिर स्थल

A Gupta period Temple Site

देवगढ़ :

वर्तमान में यह उत्तरप्रदेश के ललितपुर जिले में स्थित है। यहाँ से गुप्तकाल में निर्मित दशावतार मन्दिर प्राप्त हुआ है जो भगवान शिव को समर्पित है। यह मन्दिर प्रारम्भिक नागर शैली में निर्मित है।

(x) एक व्यापारिक स्थल

A Business Center

अरिकामेडु :

वर्तमान में यह तमिलनाडु राज्य क्षेत्र में पुदुच्चेरी के निकट स्थित है। यहाँ से रोमन सिक्के एवं बस्ती के अवशेष प्राप्त हुए हैं जो रोमन साम्राज्य के साथ व्यापार का साक्ष्य है। यह एक बंदरगाह भी था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(xi) एक बौद्ध स्थल

A Buddhist Site

बामियान:

यह अफगानिस्तान के मध्य में स्थित बामियान प्रान्त की राजधानी है। यहाँ से ~~स्थान~~ भगवान बुद्ध की प्रस्तर निर्मित विशाल मूर्ति के अवशेष स्तूप एवं विहार भी प्राप्त हुए है। कुषाणकाल में यह भारत का हिस्सा था।

(xii) एक गुप्तकालीन स्थल

A Gupta Period Site

पद्मावती:

वर्तमान में यह मध्यप्रदेश के ग्वालियर जिले में स्थित है। यहाँ नागवंश का शासन था। चन्द्रगुप्त-II ने नागवंशीय राजकुमारी कुबेरनागा से विवाह कर साम्राज्य का सुदृढ़ीकरण किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(xiii) एक मंदिर स्थल

A Temple Site

मोढेरा :

वर्तमान में यह गुजरात के मेहसाना जिले में अवस्थित है। यह चालुक्य शासक भीम-I 1026-27 ई. में सूर्य मन्दिर का निर्माण करवाया था। इस मन्दिर का सभामण्डप आकर्षक है जो अत्यन्त आकर्षक लगता है।

(xiv) एक प्रसिद्ध बंदरगाह

A famous Port

अरिकामेडु :

वर्तमान में यह तमिलनाडु राज्य में पुडुचेरी के निकट अवस्थित है। यह पूर्वी भारत का प्रमुख बन्दरगाह था जिससे द.पू. एशिया, चीन, श्रीलंका एवं रोमन साम्राज्य के साथ व्यापार होता था। यहाँ से रोमन सिक्के एवं बस्ती के साक्ष्य मिले है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(xv) एक चोलकालीन स्थल

A Chola Site

गंगईकोण्ड-चोलपुरम् :

वर्तमान में यह तमिलनाडु राज्य में स्थित है। ~~यहाँ~~ चोल शासक राजेन्द्र-I ने गंगा अभियान की सफलता के पश्चात यहाँ गंगईकोण्ड-चोलपुरम् में वृहदेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया जो द्रविड़ शैली में निर्मित है।

(xvi) एक गुफा मंदिर

A Cave Temple

~~अजन्ता~~

एलोरा :

यह महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में स्थित है। यहाँ से ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन धर्म से ~~~~ सम्बन्धित गुफाएँ प्राप्त हुई है। राष्ट्रकूट शासक कृष्ण-I ने यहाँ कैलाश मन्दिर का निर्माण करवाया जिसमें द्रविड़ शैली के तत्व दिखाई देते है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(xvii) एक राजपूत राजधानी
A Rajput Capital

चित्तौड़ :

वर्तमान में यह राजस्थान का एक जिला है। यह मेवाड़ के गुहिल राजपूतों की राजधानी थी। चित्तौड़गढ़ अपने विशाल दुर्ग के लिए प्रसिद्ध है जिसका उल्लेख अबुल फजल ने भी किया है।

(xviii) एक युद्ध स्थल
A Battle field

पानीपत :

यह हरियाणा राज्य का एक जिला है। सामरिक दृष्टि से महत्व होने के कारण यहाँ तीन युद्ध हुए। प्रथम युद्ध बाबर एवं इब्राहिम लोदी, द्वितीय अकबर एवं हेमू तथा तृतीय मराठों एवं अफगानों के मध्य हुआ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(xix) एक मुगलकालीन स्थल
A Mughal Site

फतेहपुर सीकरी :

वर्तमान में यह आगरा जिले में स्थित है। इसे अकबर ने अपनी द्वितीय राजधानी बनवाया था। यहाँ अकबर द्वारा गुजरात विजय के उपलक्ष में बुलन्द दरवाजे का निर्माण करवाया गया।

(xx) एक नील उत्पादक स्थल
An Indigo Production Site

खिलोन :

वर्तमान में यह गुजरात राज्य में स्थित है। यह पूर्व मध्यकाल में नील उत्पादन का प्रमुख केन्द्र था। पुर्तगालियों के माध्यम गुजरात के बन्दरगाहों से खिलोन से उत्पादित नील का निर्यात अरब एवं प. एशिया के देशों को किया जाता था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. (a) 8वीं सदी के मध्य आरंभ हुए राष्ट्रकूट, पाल तथा गुर्जर-प्रतिहार शासकों के बीच त्रिपक्षीय संघर्ष का विश्लेषण कीजिये। इसने उत्तर-भारत की राजनीति में किस प्रकार का प्रभाव उत्पन्न किया? 20

Analyze the trilateral struggle that started in the middle of the 8th century among the Rashtrakuta, Pala and Gurjar-Pratihar rulers. How did it influence the North-Indian politics? 20

8वीं शताब्दी में कन्नौज पर आधिकार को लेकर राष्ट्रकूट, पाल एवं प्रतिहार शासकों के मध्य संघर्ष प्रारम्भ हुआ जो लगभग 200 वर्षों तक चला। इसे त्रिपक्षीय संघर्ष के नाम से जाना जाता है।

कारण:

त्रिपक्षीय संघर्ष का प्रमुख कारण कन्नौज का आर्थिक-सामरिक-महत्व था।

वास्तव में गुप्त साम्राज्य के पतन के पश्चात् कन्नौज उत्तर भारत की ~~[illegible]~~ राजनीति का केन्द्र बन चुका था। अत: सभी राज्य अपनी प्रतिष्ठा एवं शक्ति स्थापित करने के लिए इस पर नियंत्रण स्थापित करना चाहते थे।

इसी तरह कन्नौज गंगा-यमुना के दोआब में स्थित था जो आर्थिक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि से कन्नौज महत्वपूर्ण होता था। अतः विभिन्न राज्य इस पर नियंत्रण कर आर्थिक एवं सैन्य दृष्टि से स्वयं को मजबूत बनाना चाहते थे।

इसी तरह हर्ष समय कन्नौज पर उत्तराधिकार को लेकर चक्रायुध एवं इन्द्रायुध में संघर्ष चल रहा था जिससे तीनों शक्तियों को कन्नौज पर नियंत्रण के लिए प्रोत्साहित किया।

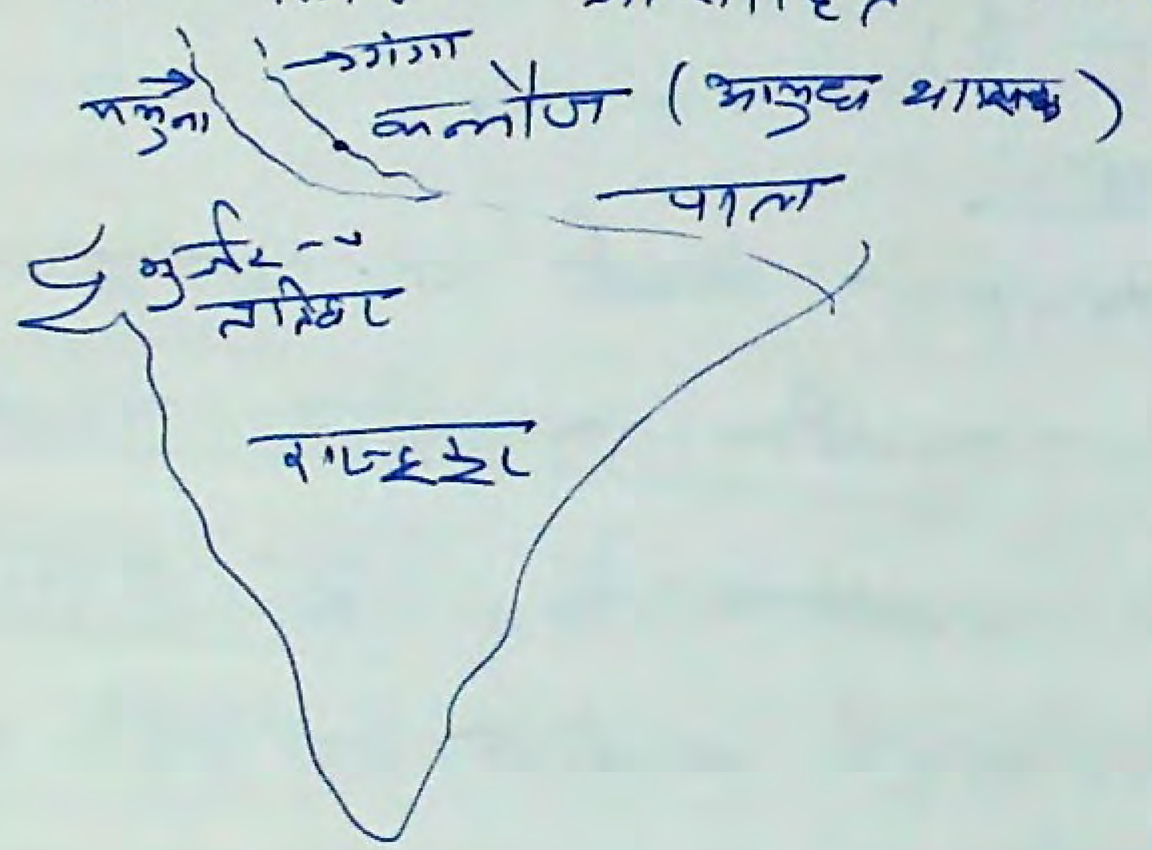

उत्तर भारत की राजनीति पर प्रभाव:

पाल, प्रतिहार एवं राष्ट्रकूटों के मध्य कन्नौज पर अधिकार के लिए यह संघर्ष लगभग 200 वर्षों तक चला जिसके कारण से राज्य

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आर्थिक एवं सैन्य शक्ति के दुर्बल बन गये। इससे उत्तर भारत में राजनीतिक शून्यता की स्थिति उत्पन्न हुई जिसका परिणाम भारतीयों की पराजय एवं तुर्कों की विजय के रूप में सामने आया।

सैन्य एवं आर्थिक स्थिति कमजोर होने से तीनों राज्यों का स्वयं पतन हो गया और उनके स्थान पर नई शक्तियों का उदय हुआ।

निष्कर्ष तौर पर कहा जा सकता है कि त्रिपक्षीय संघर्ष ने भारत में राजनीतिक शून्यता की स्थिति उत्पन्न कर तुर्कों की सत्ता स्थापना का मार्ग प्रशस्त कर दिया और भारत में दिल्ली सल्तनत की स्थापना हुई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(b) चोलकालीन स्थानीय स्वशासन तात्कालिक समय की एक विशिष्ट व्यवस्था थी। आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिये। 15

The local self-government under Cholas was a specific arrangement of the time. Critically evaluate. 15

चोलकाल की मुख्य विशिष्टता उसकी व्यापक स्थानीय शासन है जिसकी जानकारी हमें परांतक-I के उत्तरमेरूर अभिलेख से मिलती है।

यह स्थानीय शासन उर एवं सभा/महासभा जैसी संस्थाओं से संचालित किया जाता था।

'उर' गाँवों में जनसामान्य की संस्था होती थी। गाँव के पुरुष इसके सदस्य होते थे। इसके सदस्यों को 'आलुंगणम्' कहा जाता था। इसका मुख्य कार्य कृषि आधिग्रहण कर तालाब एवं स्थान निर्माण करना था।

वहीं सभा/महासभा गाँव के ब्राह्मण लोगों की संस्था होती थी इसके सदस्य पेरूमक्कल एवं सभा को पेरुंगुरी कहा जाता था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सभा अपनी विभिन्न समितियों के माध्यम से कार्य करती थी जिन्हें 'वारियम' कहा जाता था। वारियम के सदस्यों का चुनाव करने के लिए गाँव को 30 कुडुम्ब (वार्ड) में विभाजित किया जाता था। निर्वाचन कुडवोलै का (लॉटरी पद्धति) द्वारा किया जाता था।

प्रमुख समितियों का सदस्य बनने के लिए का निर्धारण किया गया था ताकि ग्राम प्रशासन में नैतिकता बनी रहे एवं व्यवस्था पर अंकुश लगाया जा सके।

योग्यता: • व्यक्ति की आयु - 35-70 वर्ष हो।
• उसके पास 1¼ वेली भूमि एवं उसका स्वयं मकान हो।
• वैदिक मंत्रों का ज्ञाता हो।

अयोग्यताएँ: → चोरी एवं पापकर्मों का आरोप न हो।
→ पहले किसी समिति का सदस्य न रहा हो।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

महासभा एवं उर अपने मामलों के सम्बन्ध में लघु गणतन्त्र के समान थी।
इनके प्रमुख कार्य निम्न थे—

1.) भूमि एवं कृषि क्षेत्र से सम्बन्धित विवादों का निपटारा करना।
2) पेयजल, सिंचाई सुविधाओं एवं आवागमन के लिए मार्गों की व्यवस्था करना
3) राजस्व वसूलना एवं राजकोष में जमा करवाना।

सीमाएँ: चोलकालीन स्थानीय शासन की निम्न सीमाएँ थी।

1.) उर के सदस्य केवल पुरुष बन सकते थे जो कौंसिल कोड के प्रतिनिधि थे
2) लॉटरी द्वारा निर्वाचन लोकतांत्रिक प्रणाली पर प्रश्न चिह्न लगाता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जाये तो इन सीमाओं के बावजूद भी प्राचीनकाल में इतनी सफलता कम नहीं है। इस प्रकार से चोलकालीन स्थानीय शासन में गाँधी के सपनों का ग्रामीण भारत एवं वर्तमान पंचायती राज व्यवस्था के बीज देखे जाते है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(c) अल्बरुनी की रचना 'किताबुल हिंद' भारतीय मध्यकालीन इतिहास के बारे में जानकारी का एक प्रमुख स्रोत है। टिप्पणी कीजिये। 15

Al Biruni's Kitab-ul-Hind is a major source of information about medieval Indian history. Comment. 15

अलबरूनी, महमूद गजनवी के साथ भारत आया था। इसने अरबी भाषा में किताबुल-हिन्द की रचना की जो 80 अध्यायों में विभाजित है। इसमें पूर्वमध्यकालीन समाज एवं संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त होती है जो निम्न प्रकार है-

अलबरूनी के अनुसार भारतीय समाज में चतु: वर्णव्यवस्था प्रचलित थी। इस समय वैश्य एवं शूद्रों में अधिक अन्तर नहीं रहा और इन दोनों को वेदपाठ करने एवं श्रवण करने पर जीभ काट ली जाती थी और कानों में पिघला शीशा डाल दिया जाता था।

स्त्रियों की दशा दयनीय थी। उन्हें तलाक एवं संपत्ति विरासत अधिकार प्राप्त नहीं थे। बाल विवाह प्रथा प्रचलित थी। दहेज ~~विवाह~~ का प्रचलन नहीं था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिन्दुओं के प्रमुख त्यौहार होला (होली) बसन्त (बसन्त) एवं शिवरात्रि (दीपावली) थे। हिन्दू गोमांस का सेवन नहीं करते थे एवं गोमूत्र को पवित्र मानते थे।

इसी तरह हिन्दू स्वर्ग-नरक एवं मोक्ष की अवधारणा से परिचित थे और वे पवित्र नदियों एवं स्थानों की तीर्थ यात्रा करते थे।

अलबरूनी के अनुसार भारत के भिन्न-भागों में अलग-अलग वर्णमालाओं का प्रचलन था जैसे - कश्मीर में सिद्धमातृका एवं मालवा में नागरी लिपि। हिन्दू अपनी पुस्तकों का शीर्षक प्रारम्भ में न लिखकर अन्त में लिखते थे।

अलबरूनी ने भारतीयों के विज्ञान सम्बन्धी ज्ञान का भी वर्णन किया है। उसके अनुसार भारतीय ब्रह्माण्ड की संरचना, ग्रहों की स्थिति,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

एवं चन्द्रमा की गति के परिकलित थे। उसके अनुसार भारतीय रसायन का उपयोग धातुकर्म एवं औषधि निर्माण में करते थे। इसी क्रम में नक्षत्र ज्योतिष का उल्लेख कर भारतीयों के चिकित्सा सम्बन्धी ज्ञान का वर्णन किया है।

सीमाएँ:

→ अलबरूनी का वर्णन धर्मग्रंथों पर आधारित है जिससे उसके वर्णन की प्रामाणिकता संदिग्ध है।

→ भारतीय रसायनों से घृणा एवं भारतीयों को गंवार कहा है।

इन सीमाओं के बावजूद भी अलबरूनी ने अपना विवरण पूर्णतया ईमानदारी से किया है और उसने अपनी अज्ञानता को बेहिचक स्वीकार किया है। साथ ही गजनवी का प्रभाव अपने विवरण पर नहीं पड़ने दिया है। इस दृष्टि से उसका विवरण मध्यकालीन भारतीय इतिहास का प्रमुख स्रोत है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

3. (a) भारतीय इतिहास में राजपूतों की उत्पत्ति के संदर्भ में प्रचलित विभिन्न मतों का परीक्षण कीजिये। इनकी उत्पत्ति विषयक विदेशी मूल की अवधारणा कहाँ तक तर्कसंगत प्रतीत होती है? 20

Examine different opinions about the origin of Rajputs in Indian history. To what extent the concept of foreign origin of Rajputs seem to be rational? 20

750-1200 ई. तक का काल भारतीय इतिहास में राजपूत काल के नाम से जाना जाता है। इस काल के दौरान अनेक राजपूत राज्यों की स्थापना हुई और इन्होंने उत्तर भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सत्ता स्थापित की।

किन्तु राजपूतों की उत्पत्ति को लेकर इतिहासकारों में मतभेद है। इस संदर्भ में विभिन्न मत दिये जाते है जो निम्न है -

1) विदेशी उत्पत्ति का सिद्धांत

कर्नल टॉड, स्मिथ एवं विलियम क्रुक जैसे इतिहासकारों ने विदेशी उत्पत्ति का सिद्धांत राजपूतों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में दिया। इनके अनुसार राजपूतों का खान-पान, वेशभूषा, रहन-सहन एवं युद्धों में रथों का प्रयोग उत्पत्ति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विदेशी जातियों शक, कुषाण एवं पहलवों से मिलता-जुलता है। अतः राजपूतों की उत्पत्ति इन विदेशी जातियों से हुई।

इस सन्दर्भ में इन विद्वानों ने चन्दबरदाई के पृथ्वीराज रासो को आधार बनाया और कहा कि अग्निकुण्ड के माध्यम से इन जातियों को भारतीय समाज में आत्मसातीकरण किया गया।

(2) देशी उत्पत्ति का सिद्धांत

श्री गौरीशंकर ओझा एवं दशरथ शर्मा जैसे इतिहासकारों ने राजपूतों की उत्पत्ति को देशी माना है। इन विद्वानों के अनुसार राजपूतों के रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा इत्यादि के आधार पर विदेशी बताया जाता है, वे सभी विशेषताएँ प्राचीन भारत के क्षत्रिय वर्ग में मिलती है। इस दृष्टि से राजपूत वैदिक क्षत्रियों का परिवर्तित रूप है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

साथ ही राजपूतों ने क्षत्रिय वर्ण के अनुसार स्वयं का सम्बन्ध सूर्य, चन्द्रमा, राम, कृष्ण इत्यादि से जोड़ा।

(3) ब्रह्मक्षत्र परम्परा से

राजपूतों की उत्पत्ति को कुछ विद्वानों के सामाजिक-आर्थिक स्थितियों से सम्बन्ध का प्रयास किया। ~~जब~~ उनके अनुसार क्षत्रिय के कारण ब्राह्मणों की शासक बने और उनके वंश ब्रह्मक्षत्र कहलाये और इससे ही राजपूतों की उत्पत्ति हुई।

निष्कर्ष के तौर पर राजपूतों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में किसी एक मत को स्वीकार कर कठिन है। यदि ऐतिहासिक तौर पर देखा जाये तो तत्कालीन भारत में विदेशी जातियों का आगमन हुआ और उनका भारतीय समाज में आत्मसातीकरण किया गया और भारतीयों (तत्कालीन जातियों) से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित हुए। इस दृष्टि से राजपूतों में देशी-विदेशी जातियों का मिश्रण दिखाई देता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) 7वीं से 10वीं शताब्दी तक पल्लवों द्वारा स्थापत्य के क्षेत्र में किये गए विकास पर प्रकाश डालिये। क्या यह काल काष्ठ एवं कंदरा कला से मुक्ति का काल था? 15

Elucidate on the architectural development under the Pallavas from the 7th to 10th centuries. Was this period the age of liberation from Cave and Wood Art? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

पल्लवों द्वारा स्थापत्यकला के क्षेत्र में मन्दिर स्थापत्य की द्रविड़ शैली का विकास हुआ। पल्लवों ने ~~[illegible]~~ वास्तुकला को काष्ठ कला एवं कंदरा कला से मुक्त किया। पल्लव वास्तुकला के प्रमुख केन्द्र निम्नलिखित हैं

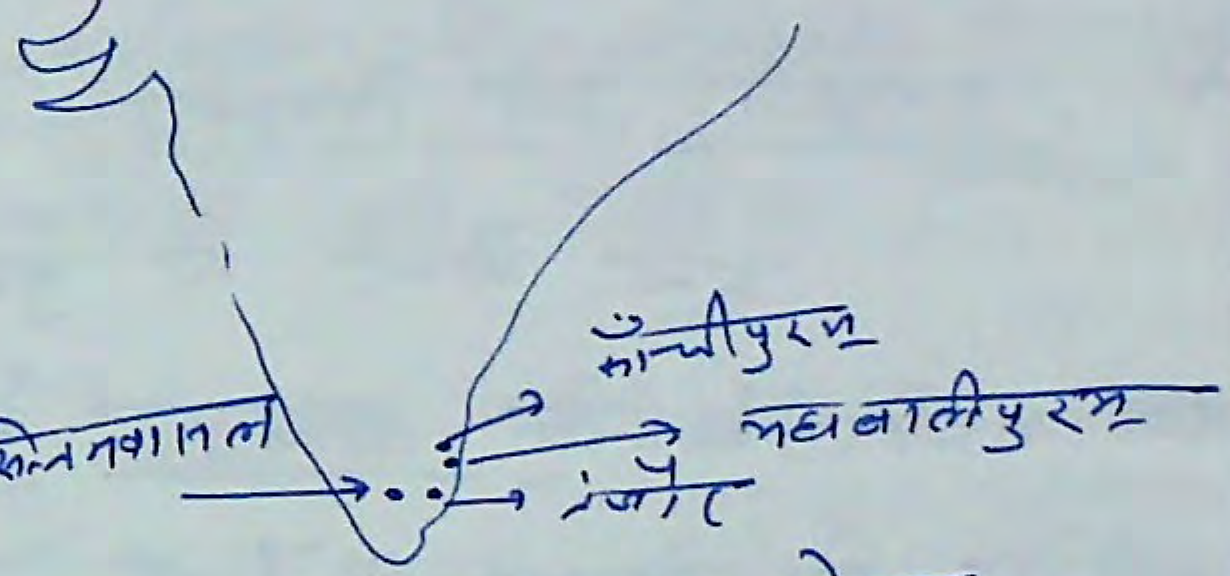

पल्लव वास्तुकला के प्रमुख केन्द्र

पल्लवकाल में शासकों के नाम के आधार पर मन्दिर वास्तुकला की चार शैलियाँ विकसित हुई जिसका विवरण निम्न प्रकार है-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महेन्द्रवर्मन शैली:

इस शैली में मण्डप मन्दिरों का निर्माण किया गया जिसमें चट्टानों को काटकर एक मण्डप एवं उसके पीछे एक-दो खोदकर बनाये हुए कमरे होते थे। ये मण्डप मन्दिर सादे होते थे।

मामल्ल शैली:

मण्डप एवं रथ मन्दिर इस शैली की मुख्य विशेषता है। इस शैली के मण्डप मन्दिर महेन्द्रवर्मन शैली की तुलना में अलंकृत एवं विकसित है।

इस शैली की मुख्य विशेषता रथ मन्दिर है जो एकाश्मक हैं। कुल रथ मन्दिरों की संख्या 8 है जिन्हें सप्तपैगोड़ा कहा जाता है। रथ मन्दिरों में द्रौपदी रथ, धर्मराज रथ, भीम रथ उल्लेखनीय है। ये रथ मन्दिर महाबलीपुरम में स्थित है।

राजसिंह शैली

इस काल में संरचनात्मक मन्दिर निर्माण ईंट एवं पत्थरों की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मन्दिरों का निर्माण होने लगा। मन्दिरों के गोपुरम् एवं शिखर के निर्माण पर विशेष बल दिया जाने लगा तथा चारों ओर परकोटे का निर्माण किया जाने लगा।

उदाहरण:- कांची का कैलाशनाथ एवं वैकुण्ठपेरुमल मन्दिर

~~नन्दिवर्मन~~ शैली:

इस काल में छोटे-छोटे मन्दिरों का निर्माण होने लगा। इस शैली के मन्दिर पूर्व मन्दिरों की प्रतिकृति है। इनमें केवल स्तम्भशीर्षों का अधिक विकास हुआ है।

उदाहरण:- कांची का मुक्तेश्वर एवं मातंगेश्वर मन्दिर तथा गुड्डीमल्लम का परशुरामेश्वर मन्दिर।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि पल्लव-काल में वास्तुकला की विभिन्न शैलियों का विकास हुआ और पल्लवों ने वास्तुकला को आगे बढ़ाया एवं द्रविड़ कला को पुख्ता किया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) 8वीं से 13वीं शताब्दी के मध्य भारत के आर्थिक विकास पर प्रकाश डालिये। क्या इस काल में भारत की स्थिति उन्नत दशा में थी? विश्लेषण कीजिये। 15

Elucidate on the economic development of India between the 8th and 13th Century. Was India of this period in advanced condition? Analyze. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

8वीं - 13वीं शताब्दी तक भारत की आर्थिक स्थिति निम्न प्रकार थी -

कृषि: इस काल में भूमि अनुदान के कारण कृषि अर्थव्यवस्था का विस्तार हुआ। राजतरंगिणी में विभिन्न प्रकार के सिंचाई साधनों का उल्लेख मिलता है। इसी तरह कृषि पाराशर, गुरुसंहिता, कृषि गरेखर एवं अभिधानरत्नमाला जैसे ग्रंथों में कृषि से सम्बन्धित विभिन्न गतिविधियों, कृषि मौसम, खाद, बीज इत्यादि का उल्लेख मिलता है।

व्यापार - वाणिज्य:

इस काल में व्यापार-वाणिज्य की स्थिति को दो भागों में विभाजित किया जाता है।

पूर्वमध्यकाल के प्रथम चरण (750-1000 ई.) में व्यापार - वाणिज्य के पतन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को जाता था। इसकाल में आंतरिक एवं बाह्य व्यापार का पतन हुआ।

आंतरिक व्यापार के पतन का कारण सामंतवाद का उद्भव एवं विकास था जिससे आर्थिक गतिशीलता बाधित हुई और बन्द अर्थव्यवस्था का विकास हुआ। इसके व्यापार - वाणिज्य, मौद्रिक अर्थव्यवस्था एवं नगरीकरण का ह्रास हुआ।

बाह्य व्यापार के पतन के कारणों में रोमन साम्राज्य का पतन था। साथ ही रोमन साम्राज्य के लोगों ने चीनी लोगों से रेशम निर्माण की विधि सीख ली जिससे भारतीय रेशम की मांग भी कम हो गई। इसी तरह हूण आक्रमण एवं अरब साम्राज्यवाद के उदय ने भी बाह्य व्यापार को प्रभावित किया।

वहीं पूर्वमध्यकाल के द्वितीय चरण (750-1200 ई.) तक आर्थिक गतिविधियों में पुनरुत्थान दिखाई देता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस काल में अनेक शिल्पियों एवं उद्योगों का विकास हुआ जिसने श्रेणियों के उदय को संभव बनाया। पश्चिमी भारत में 'निक्षेप वणिक' नामक श्रेणी संगठन बैंकिंग कार्यों से जुड़ा हुआ था।

शिल्प एवं उद्योगों ने व्यापार-वाणिज्य को प्रोत्साहित किया। मार्कोपोलो एवं अलइद्रीसी के अनुसार इस काल में द.पू. एशिया, चीन अरब देशों के साथ व्यापार होता था। निर्यात कि वस्तुओं में नील, कपूर, चन्दन एवं हाथीदांत से निर्मित सामग्री प्रमुख थी।

व्यापार-वाणिज्य के कारण मौद्रिक अर्थव्यवस्था एवं नगरीकरण को प्रोत्साहन मिला। इस काल में रूपक, आणक एवं दीनार जैसे सिक्कों एवं नाडोल, अनवाती, वंथली, जबली, गुजरात, लखनौती, कन्नौज जैसे नगरों का उदय हुआ।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 8-13 वीं शताब्दी तक भारतीय आर्थिक दशा विकसित थी जहाँ प्रारंभिक चरण आर्थिक गतिविधियों का अवसान हुआ, तो बाद में आर्थिक दशा उन्नत थी।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (a) 'रज़िया में शासक के सभी गुण विद्यमान थे सिवाय नारीत्व के।' टिप्पणी कीजिये। 15

'Razia had inherent characterisitics of a ruler but not of femininity'. Comment. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड-ख / SECTION-B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित में से प्रत्येक का उत्तर लगभग 150 शब्दों में दीजिये: 10 × 5 = 50

Answer the following in about 150 words each:

(a) तुर्कों के आगमन के पूर्व भारत की राजनीतिक स्थिति पर प्रकाश डालिये।

Highlight the political situation in India before the arrival of Turks.

तुर्कों के आगमन के पूर्व भारत में केन्द्रीकृत राजनीतिक सत्ता का अभाव था। इस समय भारत छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित था।

कश्मीर में हिन्दूशाही वंश के शासक जयपाल का शासन था। वहीं बंगाल में पाल वंश का शासन था। कन्नौज पर अधिकार को लेकर पाल, प्रतिहार एवं राष्ट्रकूटों में त्रिपक्षीय संघर्ष चल रहा था जिससे राजनीतिक शून्यता की स्थिति उत्पन्न हुई जिसने तुर्कों की विजय का मार्ग प्रशस्त किया।

इसी तरह गुजरात में सोलंकी वंश का शासन था। साथ ही बुन्देलखण्ड

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के क्षेत्र में चन्देल वंश का सत्ता पर काबिज था। वहीं राजपूताना क्षेत्र में चौहानों का शासन था।

~~इस तरह~~ इसी तरह दक्षिणी भारत में चोल-चालुक्य संघर्ष एवं राष्ट्रकूट-पश्चिमी चालुक्यों के मध्य संघर्ष चल रहा था।

इस तरह भारत में सार्वभौमिक सत्ता का अभाव था और न ही राज्य एकजुट नहीं हो सके और तुर्क आक्रमण का भारतीय प्रतिरोध नहीं मिला। जिससे भारत में तुर्कों की सत्ता स्थापना का मार्ग प्रशस्त हो गया।

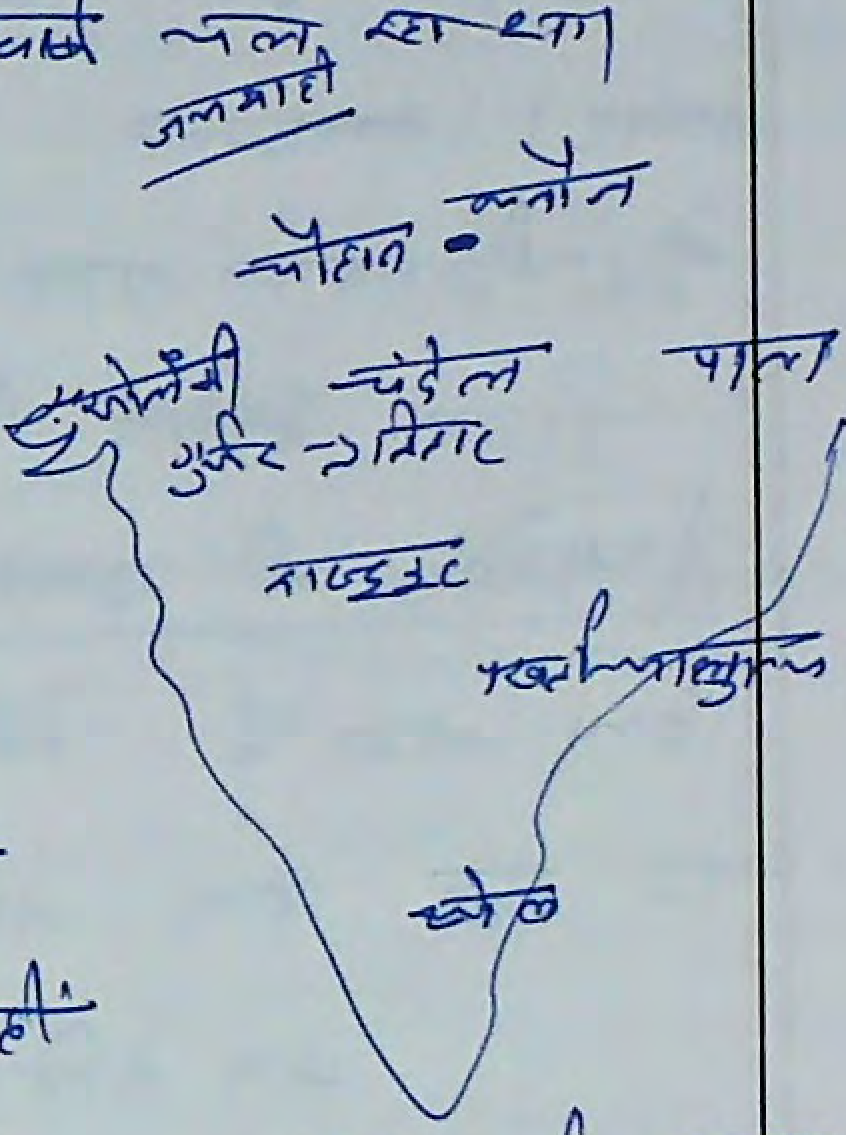

तुर्कों के पूर्व भारत की राजनीतिक दशा:

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(b) 'तांत्रिक संप्रदाय' पर संक्षिप्त लेख लिखिये।

Write a short note on the 'Tantric Sect'.

भारत में तांत्रिक संप्रदाय का विकास छठी शताब्दी हुआ और 10वीं शताब्दी तक यह उपासना की एक प्रचलित पद्धति के रूप में स्थापित हो गया। सामान्यतः इसे तंत्रवाद के नाम से भी जाना जाता है।

तंत्रवाद के अन्तर्गत महिलाओं देवताओं की उपासना को स्वीकार किया जाता है और लिंग एवं योनि पूजा पर बल दिया जाता है।

इस तांत्रिक संप्रदाय ने ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन धर्मों को प्रभावित किया। इसी के प्रभाव के कारण शैव धर्म के अन्तर्गत कापालिक, कालामुख एवं पाशुपत जैसे सम्प्रदायों का उदय हुआ।

इसी तरह बौद्ध धर्म में 'वज्रयान

Copyright – Drishti The Vision Foundation

~~[illegible]~~ सम्प्रदाय का उद्गम तंत्रवाद के प्रभाव के कारण ही हुआ। इसके कारण ही तारा जैसी देवियों को देवी के रूप में पूजा जाने लगा। वज्रयान ने भारत में बौद्ध धर्म के पतन का मार्ग प्रशस्त ~~[illegible]~~ कर दिया।।

जैन धर्म में तंत्रवाद के कारण जैन तीर्थंकरों की पत्नियों की मूर्तियाँ बनाई जाने लगी और मूर्तिपूजा प्रारम्भ हुई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(c) उत्तर भारत में विकसित नागर शैली की विशेषताओं को इसके प्रारंभिक उदाहरणों के आलोक में स्पष्ट कीजिये।

Explain the characteristics of Nagara style developed in North India in the light of its early examples.

मन्दिर निर्माण की नागर शैली का विकास गुप्तकाल से प्रारम्भ हुआ। इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्न है-

→ इस शैली के मन्दिर एक चबूतरे पर बने होते है जिन पर चढ़ने के लिए चारों तरफ सीढ़ियाँ होती है।

→ गर्भगृह वर्गाकार होता है। यह सबसे पवित्र स्थान होता है जहाँ देवमूर्ति स्थापित की जाती है।

→ गर्भगृह के ऊपर मन्दिर का शिखर होता है। शिखर रेखीय होता है और इस पर आमलक की संरचना होती है।

वहीं नागर शैली के कुछ प्रारंभिक मन्दिरों में शिखर बना नहीं था। उनकी छतें चपटी होती थी जैसे - नाचनाकुठार का पार्वती मन्दिर

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

→ गर्भगृह के चारों तरफ घूमने के लिए प्रदक्षिणा पथ होता था। मंदिर के द्वार अलंकृत होते थे और दीवारें सामान्य होती हैं।

→ मन्दिरों का निर्माण पत्थरों एवं ईंटों से किया जाता था।

उदाहरण :- कानपुर (भीतरगाँव का विष्णु मन्दिर ईंटों से निर्मित है)

→ आगे चलकर मन्दिरों में शिखर का निर्माण किया जाने लगा।

उदाह० - देवगढ़ का दशावतार मन्दिर।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(d) 'महाराष्ट्र धर्म' की विशिष्टताओं को उद्घाटित कीजिये।

Illustrate the characteristics of 'Maharashtra religion'.

मध्यकाल में महाराष्ट्र में एकनाथ, तुकाराम, नामदेव एवं ज्ञानेश्वर जैसे संतों का जन्म हुआ और इन्होंने जन सामान्य के कल्याण के लिए अनेक उपदेश दिये।

इन संतों ने तत्कालीन समाज में व्याप्त सामाजिक-धार्मिक कुरीतियों जैसे- अस्पृश्यता, ऊँच-नीच, धार्मिक-कर्मकांड एवं आडम्बरों का विरोध किया तथा एक समतामूलक समाज की स्थापना पर बल दिया।

महाराष्ट्र संतों ने पुरोहितवाद एवं मिथ्यावादी जैसे तत्वों का विरोध किया और परिश्रम की महत्ता पर बल दिया।

महाराष्ट्र संतों ने क्षेत्रीय भाषा एवं साहित्य को बढ़ावा दिया जिससे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मराठी भाषा एवं साहित्य का विकास हुआ। इसने मराठी भाषी लोगों में मेलजोल एवं एकता को बढ़ावा दिया। इस भावात्मक एकता की भूमिका को मराठा धर्म एवं राज्य के उदय में समझा जा सकता है। इस दृष्टि से मराठों के उदय में महाराष्ट्र धर्म की भूमिका देखी जा सकती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(e) अहोम राज्य पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिये।

Briefly comment on the Ahom State.

मुगल शासन के दौरान अहोम राज्य पूर्वी असम में स्थित था। वहीं पश्चिमी असम एवं ~~शासन~~ पूर्वी बंगाल में कूचबिहार का राज्य था।

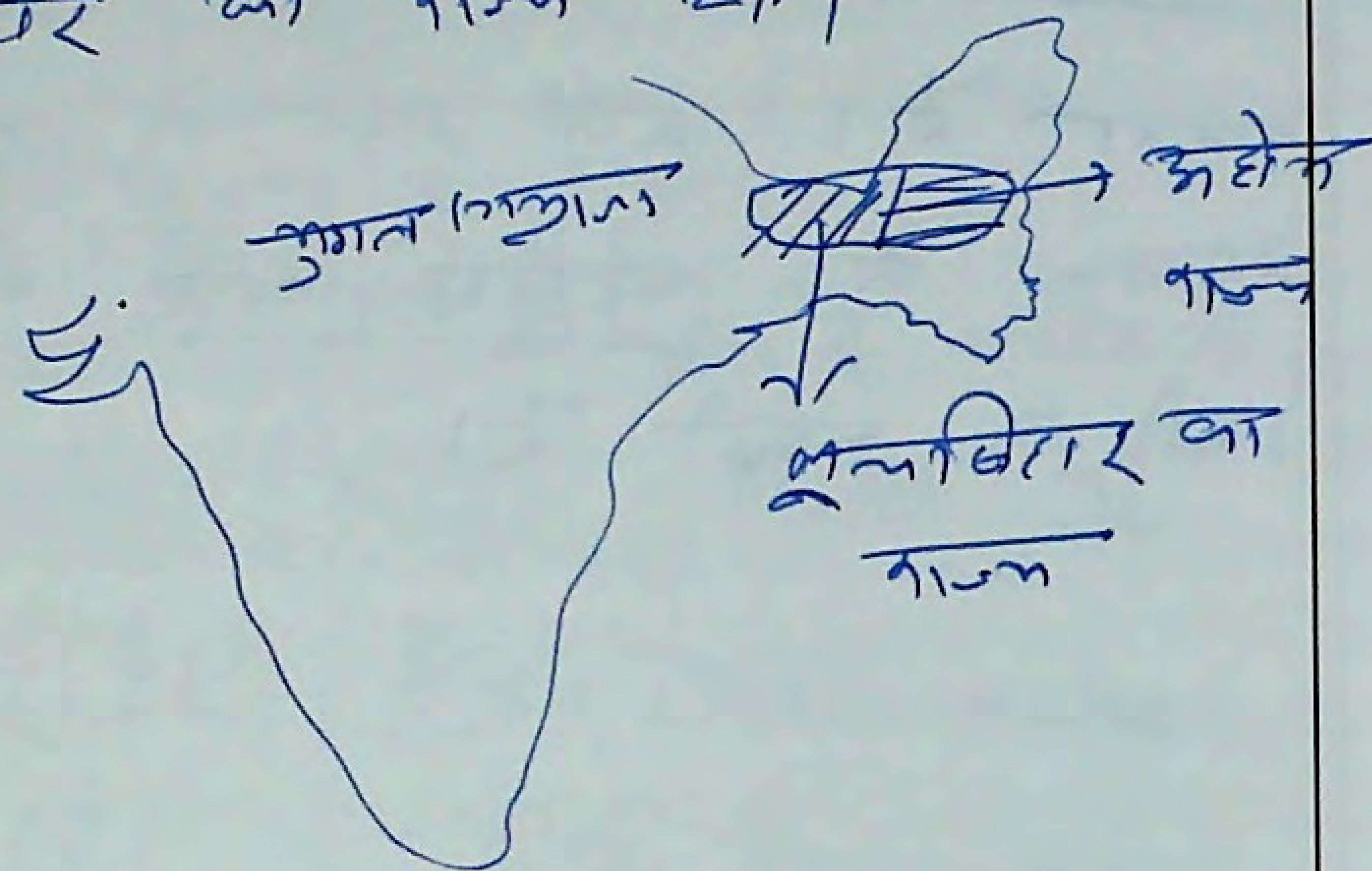

इस अहोम राज्य ने मुगल सत्ता को तैल = लौटी निपटें उत्तम चुनौती में मुगल पराजित हुए और अंतिम विजय मुगलों की हुई।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (a) उत्तर भारत में विकसित भक्ति आंदोलन के योगदानों की चर्चा करते हुए निर्गुण भक्ति की विशिष्टता को रेखांकित कीजिये। 15

Discuss the contribution of Bhakti movement of North India and highlight the characteristics of Nirguna Bhakti. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मध्यकालीन भारत में धार्मिक, कर्मकांड आडम्बरों के विरुद्ध भक्ति आंदोलन हुआ जिसका योगदान निम्न प्रकार है -

1.) भक्ति संतों ने सामाजिक कुरीतियों जैसे- अस्पृश्यता, ऊँच-नीच, जाति-व्यवस्था का विरोध किया और सामाजिक सौहार्द एवं समन्वय के महत्व का समन्वयात्मक समाज स्थापना पर बल दिया।

2) भक्ति आंदोलन के संतो ने धार्मिक कर्मकांड, आडम्बरों, रूढ़िवादिता व पुरोहितवाद का विरोध किया और जनसामान्य को मोक्ष प्राप्ति के लिए भक्ति जैसे सरल मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3) भक्ति संतों ने इस काल में ~~साम्प्र~~ साम्प्रदायिक सद्भाव की स्थापना के लिए हिन्दू-मुस्लिमों में सामंजस्य पर बल दिया। इस सन्दर्भ में कबीर एवं नानक की भूमिका उल्लेखनीय है।

4) भक्ति आंदोलन ने क्षेत्रीय भाषा एवं साहित्य के विकास को बढ़ावा दिया। इस काल में मीराबाई, तुलसी, नानक, कबीर जैसे संतों ने अवधी, गुजराती, ब्रज राजस्थानी जैसी भाषाओं के विकास को बढ़ावा दिया।

5) भक्ति आंदोलन के अधिकांश संतों ने गुरु की महत्ता पर सर्वाधिक बल दिया और समाज में गुरु के पद को प्रतिष्ठित किया। भक्ति संतों के अनुसार मोक्ष प्राप्ति हेतु ज्ञान प्राप्ति आवश्यक है और यह गुरु के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निर्गुण भक्ति की विशेषता :-

→ निर्गुण भक्ति के अन्तर्गत निराकार ईश्वर की पूजा की जाती है जबकि सगुण भक्ति में ईश्वर की मूर्तिपूजा की जाती है।

→ निर्गुण संतों के अनुसार ईश्वर का अस्तित्व है लेकिन उसे देखा नहीं जा सकता है। वहीं सगुण भक्ति में ईश्वर को मूर्ति के रूप में देखा जा सकता है।

→ निर्गुण भक्ति के संतों में नानक, कबीर एवं रैदास का नाम उल्लेखनीय है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(b) 18वीं सदी का विवाद क्या है? इस काल की प्रमुख समस्याओं के आलोक में इसका विश्लेषण कीजिये। 20

What is the debate of the 18th century? Analyze in the light of the major problems of this era. 20

18वीं शताब्दी के भारत को अंधकार के काल के रूप में निरूपित करने को लेकर इतिहासकारों में विवाद है। साम्राज्यवादी इतिहासकारों ने इसे अंधकार का काल कहा है। वहीं अन्य इतिहासकारों ने इसके विपक्ष में तर्क दिये हैं। इसका विश्लेषण हम इस काल की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक परिस्थितियों एवं समस्याओं के आलोक में कर सकते हैं

~~राजनीतिक क्षेत्र:~~ पक्ष में तर्क:

इस समय भारत में ~~के~~ मुगल केन्द्रीय सत्ता का पतन होने के कारण छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ। वहीं नादिरशाह के आक्रमण से भारत पराजित हुआ।

इसी तरह प्लासी एवं बक्सर में भारतीय पराजित हुए तथा औपनिवेशिक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

योजना एवं समता का युग प्रारम्भ हुआ।

इसी तरह आर्थिक-सामाजिक क्षेत्र में मानवतावाद का प्रचलन। बाल-विवाह, बहुविवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा जैसी प्रथाएँ समाज में महिलाओं की दयनीय स्थिति को दर्शाता है।

इस समय यूरोप प्रबोधन के निरंक को पूरा होकर वैज्ञानिक-तकनीक विकास कर रहा था जबकि भारत में वैज्ञानिक प्रगति शून्य थी। इसी सन्दर्भों में 18वीं शताब्दी अंधकार का काल थी।

विपक्ष में तर्क:

यह बात सही है कि इस समय भारत में क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ। लेकिन ये क्षेत्रीय राज्य भी नवीन प्रवृत्तियों से युक्त थे। इनकी राजनीति धर्मनिरपेक्ष थी। साथ ही इनके उदय को केन्द्रीकरण की निरंकुशता के विरुद्ध विद्रोह के रूप में देखा जा सकता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

~~इस~~ भारत से पहले ही विभिन्न धर्म मौजूद थे लेकिन ग्रामीण समाज में समानता एवं सहचर्य की भावना थी और साम्प्रदायिकता का विष समाज में नहीं था।

आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में, इस काल में भारतीय आन्तरिक एवं बाह्य व्यापार की दशा ठीक थी। भारतीय दस्तकारियों की माँग वैश्विक बाजार में अत्यधिक थी। इसी तरह वैज्ञानिक क्षेत्र में भी जयसिंह ने वेधशालाओं का निर्माण किया।

निष्कर्षतौर पर कहा जा सकता है 18वीं सदी में भारत की ~~स्थिति~~ स्थिति मिश्रित दिखाई देती है लेकिन यह 19वीं सदी से बेहतर थी जहाँ भारतीय औपनिवेशिक शोषण के शिकार थी। इस दृष्टि से 18वीं सदी अंधकार का काल नहीं थी ~~बल्कि~~ बल्कि अंग्रेजी शासन की स्थापना के बाद भारत में अन्धकार के काल की शुरुआत हुई।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(c) अकबर की धार्मिक नीति पर प्रकाश डालिये। क्या औरंगज़ेब ने इसे उलट दिया था? स्पष्टीकरण कीजिये। 15

Elucidate on Akbar's religious policy. Had Aurangzeb reversed it? Elucidate. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अकबर ने अपनी धार्मिक नीति के प्रथम चरण के अन्तर्गत उदारवादी कार्य किये। जैसे - दास प्रथा समाप्त करना, जजिया एवं तीर्थयात्रा कर समाप्त करना।

साथ ही हिन्दुओं को उच्च पदों में भागीदारी दी। उनको अपने धार्मिक चिह्न धारण कर दरबार में आने दिया। वास्तव अकबर ने इन उदारवादी कार्यों के माध्यम से गैर-मुस्लिम एवं राजपूतों का सहयोग एवं समर्थन प्राप्त करने का प्रयास किया।

वहीं अकबर ने विभिन्न धर्मों के सार को जानने के लिए इबादतखाने की स्थापना की और विभिन्न धर्मों के लोगों को उसमें प्रवेश दिया। इबादतखाने के वाद-विवाद ने अकबर को कट्टरवादी तत्वों के विरुद्ध के लिए तैयार कर दिया और अकबर ने महजरनामा की घोषणा की।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation